4

हम तो कबहुँ

हम तो कबहुँ न निज घर आये ।।टेक।।

पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये ।।
हम तो....

परपद निजपद मानि मगन है, पर परनति लपटाये ।
शुद्ध–बुद्ध सुख कन्द मनोहर, चेतन भाव न भाये ।।१।।
हम तो....

नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये ।
अमल अखण्ड अतुल अविनाशी, आतमगुन नहिं गाये ।।२।।
हम तो....

यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये ।
'दौल' तजौ अजहूँ विषयन को, सत्गुरु वचन सुनाये ।।३।।
हम तो....

हे आत्मन्! हमने कभी अपने वास्तविक घर में निवास नहीं किया और अपने चेतन स्थान को छोड़कर अनादि से हम चार गतियों में ही भटकते रहे और अनेकों बार अनेक नाम धारण किये अर्थात् भिन्न–भिन्न पर्यायों में अनेक नामों से जाने जाते रहे।

हम पर पद को ही अपना वास्तविक स्थान मानकर उसमें ही लीन हो गये, अपनी आत्मा के गुणों को तो पहचाना नहीं, और पर परिणति में उलझते रहे, उनसे लिपटे रहे। यह आत्मा मूल में तो शुद्ध, ज्ञानवान, सुख का भंडार, पूर्ण सुन्दर है लेकिन हमने उस आत्मा के अनुपम गुणों का कभी चिन्तन ही नहीं किया।

हमने चारों गतियों में भ्रमण करते हुये प्राप्त देह को ही अपना स्वरूप माना और प्राप्त पर्याय में ही अपनेपन की कल्पना करते रहे। यह आत्मा तो निर्मल, अखण्ड, विशाल व अविनाशी है। हमें इन चैतन्य के गुणों की महिमा ही नहीं आई।

आतमा का हित क्या है उसे तो जाना ही नहीं। यही हमारी बहुत बड़ी भूल रही और अब हमारे पास मात्र पछताने के और कोई मार्ग नहीं बचा। अत: दौलतरामजी कहते हैं कि अब भी समय है इन भोग विषयों का तत्क्षण त्याग करना ही उचित है तथा सच्चे गुरूओं की वाणी ही सुनने योग्य है।